डा॰ गिरिजा उरांव
एसोसिएट प्रो॰
R.M.C. सासाराम

बी॰ ए॰ पार्ट-III Hons
सत्र-2019-20
विषय- PSY paper

प्रयोगशाला-विधि के गुण (merits of Lab Experimental method):- समाज मनोविज्ञान की प्रयोगशाला विधि अधिक उपयोगी है। इस विधि में कुछ ऐसे गुण है जो दूसरी विधियों में नही पाये जाते है ये निम्न है

1. नियंत्रण (control):- समाज मनोविज्ञान की इस विधि में एक मौलिक गुण यह है कि यहाँ प्रयोगात्मक अध्ययन पूर्ण नियंत्रित परिस्थिति में किया जाता है। प्रयोगकर्ता ऐसे चरों के प्रभाव को रोक देता है, जिनके प्रभाव को तात्कालिक अध्ययन विषय पर देखने का अभिप्राय नही होता है और केवल उस पर चर या चरों के प्रभाव को नही रोकता है जिन्हे उस अध्ययन-विषय पर देखने का अभिप्राय होता है। पहले प्रकार के चरों को नियंत्रित चर और दूसरे चर या चरों को प्रयोगात्मक चर कहते है। इस नियंत्रण के कारण अध्ययन की विश्वसनीयता बढ़ जाती है।

2. परिचालन (Manipulation):- इस विधि मे प्रयोगकर्ता अपनी इच्छा के अनुसार किसी स्वतंत्र चर को परिचालित करने में सफल होता है। अध्ययन-परिस्थिति पूर्णतः नियंत्रित होती है इसलिए प्रयोगकर्ता को किसी चर को परिचालित करने में सुविधा होती है। यह गुण किसी दूसरी विधि में पर्याप्त मात्रा मे नही पाया जाता है

3. यथार्थता या परिशुद्धता (Precision):- इस विधि मे यथार्थता या परिशुद्धता का गुण की उपलब्ध है। इसका अर्थ यह है कि वातावरण के पूर्णतः नियंत्रित होने के कारण प्रयोगात्मक कार्य-विधि मे अशुद्धि-विचलन कम होती है और शुद्धता एवं निश्चितता अधिक होती है। यह गुण की इतनी मात्रा मे किसी दूसरी विधि मे नही पाया जाता है।

4. पृथक्करण (Isolation):- समाज-मनोविज्ञान की प्रयोग विधि मे पृथक्करण का गुण पाया जाता है। इसका अर्थ यह है कि यहाँ प्रयोगकर्ता कई

स्वतंत्र चरों में से किसी एक चर को अलग करके उसके प्रभाव को अध्ययन-विषय पर देख सकता है। कार्लिंगर के अनुसार (1964) प्रयोगशाला प्रयोग का यह एक महत्वपूर्ण गुण है जो इसे एक श्रेष्ठ विधि बना देता है।

5. पुनरावृत्ति (Repetition):- इस विधि में पूर्ण नियंत्रण होने के कारण प्रयोगात्मक अध्ययन को बार-बार दुहराना संभव होता है। प्रयोगकर्ता बारम्बार उसी तरह की प्रयोगात्मक परिस्थितियों को उत्पन्न कर अपने प्रयोग को दुहराता है और परिणामों की स्थिरता (stability) की जाँच करता है। दूसरी विधियों में नियंत्रण के अभाव अथवा आंशिक नियंत्रण होने के कारण पुनरावृत्ति कठिन हो जाती है।

6. उच्च आंतरिक वैधता (High Internal validity):- सियर्स आदि (Sears et al. 1991) के अनुसार प्रयोगशाला प्रयोग में उच्च आंतरिक वैधता का गुण पाया जाता है। कारण यहाँ आश्रित चर के रूप में जिन प्रभावों का अध्ययन किया जाता है वे वस्तुतः प्रयोगकर्ता द्वारा परिचालित करने के परिणाम होते हैं।

7. प्रमाणीकरण (verification):- इस विधि में कठोर नियंत्रण होने के कारण एक प्रयोगकर्ता द्वारा प्राप्त परिणामों की जाँच दूसरे प्रयोगकर्ता द्वारा संभव होती है। प्रमाणीकरण की इतनी अधिक संभावना किसी दूसरी विधि में नहीं है।